पत्रावली आज राजीनामा हेतु अभियोजन
प्रस्तुत किया गया ग्रुप्प पत्रावली
पर पेश हुई। वादीगण व मुल्जिम
व. उ. उपस्थित। चूंकि वादीगण
राजी हो जाने से इस प्रकरण
के चलने का कोई औचित्य
नहीं है अतः प्रार्थना पत्र
स्वीकार किया जाता है। पत्रावली
फैसलानुसार होकर नाजर के पास
हो तथा दाखिल दफ्तर बाद हो